1 CHAPTER भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

स्वतंत्रता पूर्व अवधि	• उत्पादन या उत्पादकता स्तरों की संरचना में थोड़े से बदलाव के साथ, लगभग ठहराव की अवधि।
1930 के दशक के मध्य	• राष्ट्रीय योजना समिति 1938 में अंग्रेजों द्वारा बनाई गई थी जिन्होंने भारत में आर्थिक नियोजन की आवश्यकता को देखा। • भारत एक विदेशी देश, यूनाइटेड किंगडम के लाभ के लिए विकास का अनुसरण कर रहा था।
स्वतंत्रतापूर्व संध्या पर भारत की आर्थिक रूपरेखा	• औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का एक उत्कृष्ट परिदृश्य पूरी तरह अस्त-व्यस्त था। • कृषि और विनिर्माण दोनों में मूलभूत समस्याएँ थीं, जिसमें सरकार केवल एक न्यूनतम भूमिका निभा रही थी।

ब्रिटिश शासन से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था

- **प्रकार:** स्वतंत्र अर्थव्यवस्था थी।
- **कृषि:** अधिकांश लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत
  - विभिन्न प्रकार की विनिर्माण गतिविधियों की विशेषता वाली अर्थव्यवस्था।
  - **उदाहरण:** सूती और रेशमी वस्त्रों के क्षेत्र में हस्तशिल्प उद्योग।
  - धातु और कीमती पत्थर के काम आदि।
- **बंगाल:** वस्त्र उद्योग के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध - मलमल का कपड़ा
- भारतीय उत्पादों में इस्तेमाल की गई सामग्री की अच्छी गुणवत्ता और यहाँ से अधिकांश आयातों में देखे जाने वाले शिल्प कौशल के उच्च मानकों के लिए दुनिया भर में प्रतिष्ठा मिली।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था

कृषि क्षेत्र	• अर्थव्यवस्था का प्रकार: मूल रूप से कृषि प्रधान
	• लोगों की भागीदारी: देश की लगभग 85% आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से आजीविका प्राप्त करती थी।
	• कृषि उत्पादकता कम हो गई, खेती के तहत कुल क्षेत्र के विस्तार के कारण इस क्षेत्र में कुछ वृद्धि हुई।
	• कृषि क्षेत्र में स्थिरता के कारण
	  ○ अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई भूमि बंदोबस्त प्रणाली: बंगाल में लागू की गई ज़मींदारी प्रणाली ने कृषि क्षेत्र से होने वाले लाभ को काश्तकारों के बजाय जमींदारों को दे दिया।
	  ○ प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर।
	  ○ सिंचाई की सुविधा का अभाव।
	  ○ उर्वरकों का नगण्य उपयोग।
	• नकदी फसलों की खेती में वृद्धि: कृषि के व्यावसायीकरण के कारण नकदी फसलों की अपेक्षाकृत अधिक उपज।

	• ब्रिटिश नीति का शायद ही कोई उपयोग था क्योंकि खाद्य फसलों के उत्पादन के बजाय, नकदी फसलों का उत्पादन किया गया था, जिनका उपयोग अंततः इंग्लैंड में लगे औद्योगिक कारखानों में किया जाता था। • सिंचाई के क्षेत्र में कुछ प्रगति हुई, लेकिन भारत की कृषि में सीढ़ीदार, बाढ़ नियंत्रण, जल निकासी और मिट्टी के विलवणीकरण में निवेश की कमी थी।

औद्योगिक क्षेत्र	• औपनिवेशिक शासन में भारत एक सुदृढ़ औद्योगिक आधार विकसित नहीं कर सका।
	• देश के हस्तशिल्प उद्योगों में गिरावट आई और कोई आधुनिक औद्योगिक आधार विकसित नहीं हो सका।
	• नीति के पीछे ब्रिटेन का उद्देश्य:
	  ○ ब्रिटेन में विकसित होने वाले आधुनिक उद्योगों के लिए भारत को महत्वपूर्ण कच्चे माल का निर्यातक बनाना चाहते थे।
	  ○ उन उद्योगों के तैयार उत्पादों के लिए भारत को एक विशाल बाजार में बदलना ताकि उनका निरंतर विस्तार उनके गृह देश ब्रिटेन के अधिकतम लाभ के लिए सुनिश्चित किया जा सके।
	• नीतियों का प्रभाव
	  ○ हस्तशिल्प उद्योग की गिरावट के कारण भारी बेरोजगारी
	  ○ भारतीय उपभोक्ता बाजार में माँग स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं की आपूर्ति से वंचित थी जिसके कारण ब्रिटेन से सस्ते विनिर्मित वस्तुओं के आयात में वृद्धि हुई।
	  ○ आधुनिक उद्योग की शुरुआत: उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दौरान, आधुनिक उद्योग ने भारत में जड़ें जमाना शुरू कर दिया लेकिन इसकी प्रगति बहुत धीमी रही।
	  ○ सूती वस्त्र मिलें: भारतीयों का वर्चस्व
	    ■ स्थान: महाराष्ट्र और गुजरात,
	  ○ जूट मिलें: विदेशियों का प्रभुत्व
	    ■ स्थान: बंगाल
	  ○ लौह और इस्पात उद्योग: 20वीं सदी की शुरुआत में आए।
	    ■ 1907: टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना हुई।
	  ○ अन्य उद्योग: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद चीनी, सीमेंट, कागज आदि उद्योगों का उदय हुआ।

विदेशी व्यापार	• अंग्रेजों द्वारा उत्पादन, व्यापार और शुल्क की प्रतिबंधात्मक नीतियों ने भारत के विदेशी व्यापार का ढाँचा, संरचना और मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। • अंग्रेजों ने भारत के आयात और निर्यात पर एकाधिकार बनाए रखा। • औपनिवेशिक काल के दौरान बड़े पैमाने पर निर्यात अधिशेष उत्पन्न हुआ था • उनकी नीतियों का प्रभाव: भारत कच्चे उत्पाद रेशम, कपास, ऊन, चीनी, नील, जूट आदि जैसे प्राथमिक उत्पादों का निर्यातक बन गया और ब्रिटिश कारखानों में बनी हल्की मशीनरी व सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्रों जैसी वस्तुओं का आयातक बनकर रह गया। • स्वेज नहर के खुलने से भारत के विदेशी व्यापार पर ब्रिटिश नियंत्रण और तेज हो गया। • निर्यात अधिशेष उत्पादन ने देश की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया। • कई आवश्यक वस्तुएँ जैसे खाद्यान्न, कपड़े, मिट्टी का तेल आदि की [illegible] कम हो गई। • इसके परिणामस्वरूप भारत में सोने या चाँदी का कोई प्रवाह नहीं हुआ, बल्कि इसका उपयोग ब्रिटेन में औपनिवेशिक सरकार द्वारा स्थापित एक कार्यालय द्वारा किए गए खर्चों के भुगतान के लिए किया जाता था व अंग्रेजों द्वारा लड़े गए युद्ध पर खर्च किया जाता था। • इन सब के कारण भारतीय धन की निकासी हुई।

जनसांख्यिकीय दशा	• पहली जनगणना: 1881
	• भारत की जनसंख्या वृद्धि में असमानता थी।
	• 1921 तक भारत जनसांख्यिकीय संक्रमण के पहले चरण में था।
	• 1921 के बाद संक्रमण का दूसरा चरण शुरू हुआ।
	• इस स्तर पर न तो भारत की कुल जनसंख्या और न ही जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत अधिक थी।
	• सामाजिक विकास संकेतक:
	  ○ समग्र साक्षरता स्तर: 16% से कम
	  ○ महिला साक्षरता स्तर: 7%
	  ○ जनसंख्या के बड़े हिस्से तक सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव था।
	  ○ जल और वायु जनित रोग बड़े पैमाने पर थे।
	  ○ कुल मृत्यु दर बहुत अधिक थी।
	  ○ शिशु मृत्यु दर: 218 प्रति हजार जबकि वर्तमान शिशु मृत्यु दर 33 प्रति हजार है।
	  ○ जीवन प्रत्याशा: 32 वर्ष वर्तमान 69 वर्षों के विपरीत।
	• व्यापक गरीबी: उस समय की भारत की जनसंख्या की दशा और ख़राब हो गई।

व्यावसायिक संरचना	• कृषि क्षेत्र: कार्यबल का सबसे बड़ा हिस्सा 70-75% के उच्च स्तर पर बना रहा। • विनिर्माण क्षेत्र: कार्यबल के 10% हिस्से को रोजगार मिल पा रहा था। • सेवा क्षेत्र: इसमें कार्यबल का 15-20% हिस्सा शामिल था। • क्षेत्रीय भिन्नता का विकास: तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी, बॉम्बे और बंगाल के कुछ हिस्सों में कृषि क्षेत्र पर श्रमबल की निर्भरता में गिरावट देखी गई, साथ ही विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में वृद्धि हुई। • उड़ीसा, राजस्थान और पंजाब जैसे राज्यों में एक ही समय के दौरान कृषि में कार्यबल की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई।

आधारिक संरचना	• रेलवे, बंदरगाह, जल परिवहन, डाक और तार जैसी सुविधाओं हेतु बुनियादी ढाँचे का विकास हुआ।
	• सड़कें: ब्रिटिश शासन के आगमन से पहले भारत में निर्मित सड़कें आधुनिक परिवहन के लिए उपयुक्त नहीं थी अर्थात नई सड़कों का निर्माण किया गया।
	  ○ उद्देश्य: भारत के भीतर सेना को संगठित करने और ग्रामीण इलाकों से कच्चे माल को निकटतम रेलवे स्टेशन या बंदरगाह तक पहुँचाने के लिए इन्हें दूर इंग्लैंड या अन्य आकर्षक विदेशी गंतव्यों में भेजने के लिए।
	• रेलवे: अंग्रेजों द्वारा 1850 में भारत में शरू की गई और इसे उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक माना जाता है।
	  ○ भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:
	  ○ इसने लोगों को लंबी दूरी की यात्रा करने और भौगोलिक और सांस्कृतिक बाधाओं को कम में सक्षम बनाया।
	  ○ इसने भारतीय कृषि के व्यावसायीकरण को बढ़ावा दिया जिसने भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की आत्मनिर्भरता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।
	  ○ भारत के निर्यात की मात्रा में निस्संदेह विस्तार हुआ लेकिन इसका लाभ शायद ही कभी भारतीय लोगों को मिला हो।
	  ○ रेलवे की शुरुआत के कारण भारतीय लोगों को जो सामाजिक ला भा आर्थिक नुकसान से कहीं अधिक था।
	• अंतर्देशीय व्यापार और समुद्री मार्ग

	○ अंग्रेजों के ये उपाय संतोषजनक नहीं थे। ○ अंतर्देशीय जलमार्ग भी अलाभकारी साबित हुए जैसे उड़ीसा तट पर तटवर्ती नहर के मामले में। • टेलीग्राफ सिस्टम: भारत में विकसित टेलीग्राफ की महंगी प्रणाली की शुरूआत ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य की पूर्ति की। • डाक सेवाएँ : उपयोगी सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति के बावजूद अपर्याप्त बनी रहीं।

स्वतंत्रता के बाद की अर्थव्यवस्था

1950	• आर्थिक विकास की एक विशेष रणनीति को अपनाना। ○ तेजी से औद्योगीकरण: केंद्र द्वारा तैयार पंचवर्षीय योजना को लागू करना। ○ इस प्रक्रिया में भारी मात्रा में संसाधन जुटाना और उन्हें बड़े औद्योगिक राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों के निर्माण में निवेश करना निहित था। • चुने गए उद्योग: स्टील, रसायन, मशीन और उपकरण, इंजन, बिजली। • सार्वजनिक उद्यमों के निर्माण के लिए निवेश का निर्देश दिया गया। • लक्ष्य: सार्वजनिक स्वामित्व के तहत उत्पादक संसाधनों के एक बड़े हिस्से को लाने के लिए लोकतांत्रिक तरीकों का उपयोग करके "समाज के समाजवादी पैटर्न" की स्थापना करना। • स्वतंत्र भारत में नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था थी।

नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था

योजनाबद्ध या समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित आर्थिक प्रणाली
• एक आर्थिक प्रणाली जहाँ सरकार वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और मूल्य निर्धारण को नियंत्रित करती है। • कभी-कभी इसे कमांड इकोनॉमी के रूप में जाना जाता है। • सरकार फैसला करती है : ○ किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है, ○ उत्पादन और वितरण विधि, ○ वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें • सरकार : केंद्रीय योजनाकार, नियामक और नियंत्रक। • उदाहरण : उत्तर कोरिया, ईरान, लीबिया और क्यूबा। • चीन में एक कमांड अर्थव्यवस्था थी। ○ साम्यवादी और पूंजीवादी दोनों आदर्शों वाली मिश्रित अर्थव्यवस्था की ओर मुड़ने से पहले।	• कमांड और फ्री-मार्केट सिस्टम दोनों की विशेषताएँ। • आंशिक रूप से सरकार द्वारा नियंत्रित और आंशिक रूप से ही मांग और आपूर्ति की शक्तियों पर आधारित। • दुनिया की अधिकांश महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाएँ अब मिश्रित अर्थव्यवस्थाएँ हैं, ○ समाजवाद और पूंजीवाद के संयोजन के तहत संचालित, ○ राजकोषीय या मौद्रिक नीतियों का उपयोग ○ आर्थिक मंदी के दौरान विकास को प्रोत्साहित करने के लिए • मिश्रित आर्थिक प्रणाली में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र निहित हैं। • एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में सीमित सरकारी विनियमन।